गर्गजातक

(हिन्दी टीका सहित)

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई.

गर्गजातकम्

पाठकमंगलसेनात्मज–काशीरामविरचितया

हिन्दीटीकयासमेतम्

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई – ४०० ००४.

संस्करण : जुलाई २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : २० रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका

विदित हो कि इस पुस्तकमें बहुतसे बालकोंके जन्मपत्रीके योग कहे हैं, पहली बार मृत्युकारक योग कहे हैं और फिर राजयोग धनिकयोग माता पिताके अरिष्ट और मृत्युयोग बहुतसे कहे हैं और इनके बीच बीच अरिष्टभंग योग भी झलका दिये हैं और चिरायुयोग भी कहे हैं और यह भी कहा है कि बालक अपः पितासे उत्पन्न है वा अन्य किसी जातिसे है और बालकके विवाह वा संतान वा भाई कुटुंब इत्यादिक बहुतसे योग इसके विषें विद्यमान हैं. इस पुस्तकका और जन्मपत्रका योग पूरा मिलता है. यह पुस्तक पहले कहीं नहीं छपी थी हमने लोकहितार्थ ढाढोलिग्रामनिवासी पं. काशीरामसे भाषा कराके और बड़े परिश्रमसे शुद्ध करके छापा है. इसके मंगानेसे वह आनंद आता है कि एक हाथमें जन्मपत्र लीजिये दूसरे हाथमें दक्षिणा ग्रहण कीजिये और इसको थोडा सा पढा हुआ भी जन्मपत्रके फलको कह सकता है.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण - मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः

अथ

हिन्दीटीकासहितं

गर्गजातकम्

क्रूरक्षेत्रे यदा जन्म अस्तको लग्ननायकः ॥
अर्के जीवे तथा पातः सोऽष्टवर्षेण जीवति ॥ १ ॥

नत्वा सरस्वतीं देवीं ध्यात्वा देवं जनार्दनम् ।
सर्वजनावबोधाय नृभाषां गर्गजातके ॥ १ ॥

भाषा – जिस मनुष्यका जन्म क्रूर गृहमें हो और अस्त नाम सप्तम घरमें जन्मलग्नका स्वामी बैठा हो और जीव नाम बृहस्पति सूर्यके साथ विद्यमान होकर पात नाम अष्टम स्थानमें बैठा हो तो वह पुरुष आठवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

षष्ठाष्टमे च मूर्त्तौ च बुधभौमौ यदा स्थितौ ॥
तस्करं घोरकर्माणां करपादं विनश्यति ॥ २ ॥

भाषा – जिस मनुष्यके छठे, आठवें वा मूर्तिमें बुध और मंगल स्थित हों तो वह पुरुष तस्कर और घोर कर्मका करनेवाला होता है और हाथ पांव करके हीन होता है ॥ २ ॥

षष्ठाष्टमे च मूर्त्तौ च जन्मकाले यदा बुधः ॥
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युरमृते यदि सिंचति ॥ ३ ॥

भाषा – जो छठे, आठवें और मूर्तिमें यदि किसी पुरुषकी जन्मलग्नके विषें बुध विद्यमान हो तो वह बालक अमृतकरके भी सींचा हुआ हो तो भी चौथे वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवः जीवक्षेत्रे च मंगलः ॥
द्वादशाब्दे भवेन्मृत्यू रक्षते यदि शंकरः ॥ ४ ॥

भाषा – यदि मंगलके घरका बृहस्पति हो और बृहस्पतिके घरका मंगल हो तो वह बालक शंकर करके रक्षा किया हुआ भी बारहवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टमद्वितीयकः ।।
षष्ठे वर्षे भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशय ।। ५ ।।

भाषा – मंगलके घरका बृहस्पति जब छठे, आठवें वा द्वितीय स्थानोंके विषें स्थित हो तो उत्पन्न भये बालककी निःसंदेह छठे वर्षमें मृत्यु होती है ।। ५ ।।

जन्ममूर्त्तौ यदा राहुरष्टषष्ठे च चंद्रमाः ।।
विंशद्रात्रौ भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ।। ६ ।।

भाषा – जिसके जन्मसमयके विषें मूर्तिमें राहु हो और छठे और आठवें घरमें चंद्रमा हो तो उत्पन्न भया बालक वीस रात्रिमें निःसंदेह मृत्युको प्राप्त होता है ।। ६ ।।

चतुर्थेपि यदा राहुः केंद्रे भवति चंद्रमाः ।।
विंशद्रात्रौ भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ।। ७ ।।

भाषा – यदि चौथे स्थानमें राहु हो और केंद्रमें अर्थात् मूर्ति, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानोंमेंसे किसी जगह चंद्रमा स्थित हो तो उत्पन्न भया बालक निःसंदेह वीस रात्रिमें मृत्युको प्राप्त होता है ।। ७ ।।

सप्तमस्थो यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा शशी ।।
दशवर्षे भवेन्मृत्युरमृते यदि सिंचति ।। ८ ।।

भाषा – जिस पुरुषके सप्तमस्थानमें राहु हो और जन्मलग्नमें चंद्रमा बैठा हो तो वह बालक अमृत करके सींचा हुआ भी दशवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ।। ८ ।।

द्वादशे च यदा चंद्रो षष्ठे पापग्रहो भवेत् ।।
अल्पायुर्जायते बालोदररोगी न संशयः ।। ९ ।।

भाषा – यदि बारहवें घरमें चन्द्रमा बैठा हो और छठे स्थानमें कोई पापग्रह स्थित हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया बालक अल्पायु अर्थात् थोड़ी आयुवाला और हमेशा उदरमें रोग रहनेवाला रहता है ।। ९ ।।

नवमे दशमे राहुर्जन्मकाले यदा स्थितः ।।
षोडशाब्दे भवेन्मृत्युर्यदि शक्रोऽपि रक्षति ।। १० ।।

भाषा – जिस पुरुषके जन्मसमयमें नवम और दशम स्थानमें राहु स्थित

हो तो वह पुरुष इन्द्र करके रक्षा किया हुआ भी सोलहवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ।। १० ।।

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।।
विंशे वर्षे भवेन्मृत्युरुत्पन्नो यदि बालकः ।। ११ ।।

भाषा – यदि शनिके घरका सूर्य हो और सूर्यके घरका शनैश्चर हो तो उत्पन्न भया बालक वीसवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ।। ११ ।।

जन्मकाले यदा राहुः षष्ठे वा यदि चंद्रमाः ।।
गुदारोगी च मंदाग्निरंगहीनो हि जायते ।। १२ ।।

भाषा – यदि जन्मलग्नमें राहु और चन्द्रमा दोनों छठे स्थानमें बैठे हों तो वह पुरुष गुदारोगी और मंदाग्नि और कोई अंगकरके हीन होता है ।। १२ ।।

षष्ठाष्टमे जन्मकाले स्थितौ च शनिभास्करौ ।।
राजरोगे भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ।। १३ ।।

भाषा – किसी पुरुषके जन्मकालमें, छठे और आठवें घरमें शनि और सूर्य बैठे हों तो उत्पन्न भये पुरुषकी राजरोगसे निःसंदेह मृत्यु होती है ।। १३ ।।

जन्मकाले तनुस्थाने भवेद्देवोऽपि भास्करः ।।
स्थानहीनो भवेद्बालो शोकसंतापकारकः ।। १४ ।।

भाषा – जिस पुरुषकी जन्मकुंडलीके विषें तनुस्थानमें सूर्य स्थित हो तो वह पुरुष शोकसंताप करके तपायमान हुआ स्थानकरके हीन होता है ।। १४ ।।

दशमस्थो यदा भौम उच्चे शत्रुगृहे स्थितः ।।
सूतकेपि तदा मृत्युर्भवेन्मातुर्न संशयः ।। १५ ।।

भाषा – यदि दशमस्थानमें मंगल स्थित हो और कोई मंगलका ही शत्रु मंगलके उच्चस्थानगत हो तो उत्पन्न भये प्राणीकी माता निःसंदेह सूतकमें ही मृत्युको प्राप्त होती है ।। १५ ।।

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चंद्रो वा यदि पश्यति ।।
सूतकेपि तदा मृत्युः शक्रोऽपि यदि रक्षति ।। १६ ।।

भाषा – लग्नमें वा अष्टम स्थानमें बैठे भये राहुको यदि चंद्रमा देखता होवे तो उत्पन्न भये बालककी यदि इंद्र भी रक्षा करे तो भी सूतकमें ही मृत्युको प्राप्त होता है ।। १६ ।।

केंद्रे शुक्रगुरौ यस्य द्वादशे यदि भास्करः ।।
लग्ने बुधश्च संप्राप्तः शतं जीवति बालकः ।। १७ ।।

भाषा -- केंद्र अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानोंके विषें शुक्र और गुरु (बृहस्पति) बैठे हों और द्वादश नाम बारहवें घरमें सूर्य बैठा हो और लग्नमें बुध हो तो वह बालक शत नाम सौ वर्षकी आयुवाला होवे है ।। १७ ।।

गुरुर्धनुषि मीने च तथा कर्कटकेऽपि च ।।
लग्नत्रिकोणकेंद्रे वा तदारिष्टं न जायते ।। १८ ।।

भाषा – जो बृहस्पति धनु और मीन और कर्कका होकर लग्नमें वा त्रिकोण स्थानमें वा केंद्रमें होवे तो उस पुरुषको आजन्मपर्यंत अरिष्ट नहीं होता है ।। १८ ।।

बुधभार्गवजीवानामेकोऽपि यदि केंद्रगः ।।
स्वस्थानबलसंयुक्तस्तदारिष्टं न जायते ।। १९ ।।

भाषा – जो बुध शुक्र, बृहस्पति इनमेंसे एक भी केंद्रमें बैठा हो वा अपने घरका वा बलकरके संयुक्त हो तो उत्पन्न भये बालकको कभी अरिष्ट नहीं होवे है ।। १९ ।।

शनैश्चरस्तुलाकुंभौ मकरे च यदा भवेत् ।।
आद्ये षष्ठतृतीये च तदारिष्टं न जायते ।। २० ।।

भाषा – शनैश्चर तुला, कुंभ वा मकरका होकर यदि लग्न और छठे, तीसरे स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें बैठा होवे तो उत्पन्न भये प्राणीका सर्व अरिष्ट दूर करता है ।। २० ।।

यदा भानुर्भवेत् सिंहे मेषे च मित्रवीक्षितः ।।
यदि षष्ठोऽपि लाभस्थस्तदारिष्टं न जायते ।। २१ ।।

भाषा – यदि भानु सिंहका वा मेषका होकर छठे और लाभ (ग्यारहवें) स्थानमें बैठा हो और उसको कोई मित्रग्रह देखता हो तो उस बालकको अरिष्ट नहीं होता है ।। २१ ।।

मेषे वृषे कुलीरे वा राहुर्लग्नमुपासितः ।।
यदा सौम्यग्रहैर्दृष्टे तदारिष्टं न जायते ।। २२ ।।

भाषा – मेष और वृष, कुलीर नाम कर्क इन राशियोंका राहु होकर लग्न में

बैठे और उसको सौम्य ग्रह देखता होवे तो उत्पन्न भये बालकके सर्व अरिष्ट दूर कर देता है ।। २२ ।।

लग्ने सौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।।
कर्मस्थाने यदा भौमो राजयोगो विधीयते ।। २३ ।।

भाषा – लग्नमें सौरि नाम शनैश्चर और चन्द्रमा बैठे हों और त्रिकोणस्थान में जीव (बृहस्पति) वा सूर्य स्थित हों और कर्म नाम दशवें स्थानमें यदि मंगल हो तो राजयोग जानना चाहिये ।। २३ ।।

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो यदा भवेत् ।।
तस्य नो जीवति भ्राता एकोऽपि च नृपैः समः ।। २४ ।।

भाषा – जिसके नवम स्थानमें सूर्य अपने घरका होकर बैठा हो तो उसका भ्राता नहीं जीता है और अकेला राजाके समान होता है जिस प्रकार कि राजा एकही होता है तैसेही वह पुरुष भाईकरके हीन होता है ।। २४ ।।

कर्मस्थाने निजक्षेत्री यदि राहुर्भवेदिह ।।
भौमशुक्रबुधैर्युक्तः क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ।। २५ ।।

भाषा – कर्म नाम दशम स्थानमें राहु मंगलके घरका होकर बैठा हो और मंगल, शुक्र, बुधकरके युक्त हो तो क्षणमें वृद्धि और क्षणमें क्षय होवे है ।। २५ ।।

धनस्थाने यदा क्रूरः सहजे च तमस्तथा ।।
पंचमे च भवेज्जीवो नीचजातिस्तदा भवेत् ।। २६ ।।

भाषा – जो धनस्थानमें क्रूर ग्रह हो और सहज नाम तीसरे स्थानमें तम नाम राहु बैठा हो और पंचम घरमें जीव (बृहस्पति) बैठा हो तो उस प्राणीको नीच जातिसे उत्पन्न भया कहे ।। २६ ।।

नवपंचचतुर्थेषु स्थाने सूर्यादयो ग्रहाः ।।
आदौ जाता विनश्यंति पश्चाज्जातश्च जीवति ।। २७ ।।

भाषा – नवम पंचम चतुर्थ इन स्थानोंमें जो सूर्यादि ग्रह स्थित हों तो पहले उत्पन्न भये भाईकी मृत्यु होवे और पश्चात् नाम पीछेका बालक आयुवाला होता है ।। २७ ।।

धनस्थो न यदा क्रूरः भौमसौरिसमन्वितः ।।
सहजे च यदा राहुस्तस्य भ्राता न जीवति ।। २८ ।।

भाषा – धनस्थानमें यदि क्रूर ग्रह हो और धनस्थान मंगल शनिकरके युक्त हो और तीसरे घरमें राहु बैठा हो तो उत्पन्न भये प्राणीका भाई नहीं जीता है ।। २८ ।।

धने व्यये तदा लग्ने सप्तमे भवने ग्रहः ।।
छत्रयोगं विजानीयात्स्वकुले नायको भवेत् ।। २९ ।।

भाषा – जिस पुरुषके जन्मसमयमें धन और व्यय तथा लग्न और सप्तम इन स्थानोंमें जो सर्व ग्रह स्थित हों तो छत्रयोग जानना और ऐसे योगमें उत्पन्न भया पुरुष अपने कुलका नायक होता है ।। २९ ।।

लग्ने शुक्रो व्यये सौम्यो धने क्रूरस्तथैव च ।।
राजयोगे भवेद्राजा दानदारिद्रचभास्करः ।। ३० ।।

भाषा – जिस पुरुषके जन्मलग्नमें शुक्र हो और व्यय नाम द्वादश स्थानमें सौम्य ग्रह हो और धनस्थानमें क्रूर ग्रह हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया पुरुष राजा होता है और दान नाम व्यय स्थानमें सूर्य हो तो दरिद्री होता है ।। ३० ।।

लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यस्तथैव च ।।
सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयंकरः ।। ३१ ।।

भाषा – जो लग्नमें क्रूर ग्रह हो और व्यय नाम बारहवें घरमें क्रूर ग्रह हो और धनस्थानमें सौम्य ग्रह हो और सप्तम घरमें क्रूर ग्रह हो तो परिवारका क्षय करनेवाला होता है ।। ३१ ।।

धने चंद्रे च सौरिश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ।।
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगो विधीयते ।। ३२ ।।

भाषा – जो धनस्थानमें चंद्रमा और सौरि नाम शनि हो और मेषके बृहस्पति हो और दशम स्थानमें राहु शुक्र बैठे हों तो राजयोग कहा है ।। ३२ ।।

धने व्ययेऽष्टमे क्रूरो जन्मकाले भवेद्यदि ।।
तस्य त्वक्षिविनाशश्च द्वादशाऽष्टमवासरे ।। ३३ ।।

भाषा – जिस पुरुषके जन्मकालमें धन और व्यय और अष्टम इन स्थानोंमें यदि क्रूर ग्रह हो तो उत्पन्न भये प्राणीका नेत्र नाशको प्राप्त होता है, इसमें बारहवें वा आठवें दिनोंकी अवधि जानना ।। ३३ ।।

अष्टमे भवने भौमः सप्तमे राहुसंभवः ।।
भौमःसौरेण संयुक्तस्तस्य भ्राता न जीवति ।। ३४ ।।

भाषा – अष्टम स्थानमें मंगल बैठा हो और सप्तम घरमें राहु हो और मंगल शनिकरके युक्त हो तो उसका भ्राता नहीं जीता है ।। ३४ ।।

तिथ्यंते च दिनांते च लग्नस्यांते तथैव च ।।
रात्रावपि च यो जातः सोन्यजातो भविष्यति ।। ३५ ।।

भाषा – जिस पुरुषका तिथिके अंतका जन्म हो वा दिनके अंतका जन्म हो वा लग्नके अंतका जन्म हो वा रात्रीका जन्म हो तो उसको अन्यजातिसे उत्पन्न भया कहे ।। ३५ ।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा भौमः कर्मस्थाने निरीक्षते ।।
बुधः क्रूरसमाविष्टः स्वल्पकर्मफलप्रदः ।। ३६ ।।

भाषा – अपने घरका मंगल होकर कर्म नाम दशम घरको देखता हो और बुध क्रूर ग्रहकरके युक्त हो तो स्वल्प कर्मके फलको भोगनेवाला होता है ।। ३६ ।।

सिंहे जीवस्तथा शुक्रो कन्यायां मिथुने शनिः ।।
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ।। ३७ ।।

भाषा – सिंहका बृहस्पति और कन्याका शुक्र और मिथुनका शनि और अपने घरका मंगल हिबुक नाम चतुर्थ स्थानमें बैठा होवे तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया पुरुष बहुतोंका मालिक होवे है ।। ३७ ।।

कन्यायां सौरिचंद्रे च मृगे भौमे घटे तमः ।।
सिंहे जीवस्तथा जातो दुष्टपक्षक्षयंकरः ।। ३८ ।।
अस्मिन्योगे समुत्पन्नः सामान्यो नैव मानवः
कुटुंबस्य समुद्धर्त्ता स भवेद्राजयोगतः ।। ३९ ।।

भाषा – कन्याका शनि और चंद्रमा हो और मकरका मंगल और कुंभका राहु, सिंहका जीव नाम बृहस्पति हो तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया मनुष्य दुष्टपक्ष नाम शत्रुके पक्षका नाश करनेवाला होता है और इसी योगके विषें उत्पन्न भया मनुष्य सामान्यबलवाला होवे है और कुटुंबका उद्धार करनेवाला राजयोगके समान होता है ।। ३८ ।। ३९ ।।

शुक्रो जीवो रविर्भौमो धनुर्मकरकुंभयोः ।।
मीने च वत्सरे विंशे जातस्य क्रूरकर्मकृत् ।। ४० ।।

भाषा – शुक्र धनका, बृहस्पति, मकरका, सूर्य कुंभका, मंगल मीनका हो तो वह बालक वीस वर्षका होकर क्रूर कर्मोंको करनेवाला होता है ।। ४० ।।

एकादशे यदा क्रूरः पंचमे शुक्रशीतगू ।।
प्रथमे कन्याजन्म माता तस्य सकष्टका ।। ४१ ।।

भाषा – जो ग्यारहवें स्थानमें क्रूर ग्रह हों और पांचवें स्थानमें शुक्र और शीतगु नाम चंद्रमा वैठे हों तो ऐसे योगवालेके प्रथम कन्याका जन्म होता है और उस संतानके होनेसे उस कन्याकी माता कष्टसे जीती है ।। ४१ ।।

सुहृत्स्थाने यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः ।।
बुधो वा नवमे षष्ठे तस्य बंधुक्षयंकरः ।। ४२ ।।

भाषा – जो सुहृद् नाम चतुर्थ घरमें राहु बैठा हो और धनस्थानमें बृहस्पति हो और बुध नवम छठे स्थानमें बैठा होवे तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया प्राणी भाईका क्षय करनेवाला होता है ।। ४२ ।।

धर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी ।।
तस्य कार्याणि सिध्यंति राजमान्यो भवेन्नर ।। ४३ ।।

भाषा – जो धर्म नाम नवम स्थानमें यदि जीव बृहस्पति वैठा हो और उसी बृहस्पतिके साथमें बुध शुक्र शशी नाम चंद्रमा विद्यमान हो तो वह पुरुष कार्योंकी सिद्धि करनेवाला और राजाकरके माननीय होता है ।। ४३ ।।

षष्ठाष्टमे पंचमे च नवमे द्वादशे तथा ।।
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यो सकष्टकः ।। ४४ ।।

भाषा – जो छठे आठवें और पंचम नवम द्वादश इन स्थानोंके विषें सौम्य और क्रूर ग्रहोंका योग हो तो वह पुरुष राजा करके माननीय और कष्टकरके युक्त होवे है ।। ४४ ।।

पंचषष्ठाष्टमगता नवमस्था यथाक्रमम् ।।
भौमो राहुः शितः सूर्यः स्वपक्षपरिपालक ।। ४५ ।।

भाषा – जिस पुरुषकी जन्मकुंडलीमें पंचम स्थानमें मंगल और छठे राहु, अष्टम शितनाम शुक्र और नवम सूर्य हो तो वह पुरुष अपने पक्षका पालन करने-नाला होता है ।। ४५ ।।

लग्ने सौरिस्तथा चंद्रश्चाष्टमे भवने शितः ।।
राजमान्यो तथा कामी भोगवांश्च यथा तथा ।। ४६ ।।

भाषा – जिस पुरुषकी जन्मकुंडलीमें यदि लग्नमें सौरि नाम शनि हो और लग्नमेंही चंद्रमा हो और अष्टम घरमें शित नाम शुक्र बैठा होवे तो वह पुरुष अत्यंत कामी राजाकरके मान्य और यत्रतत्र भोगोंका भोगनेवाला होता है ।। ४६ ।।

मकरस्थो यदा चंद्रो नीचे शत्रुगृहे स्थितः ।।
भ्रातृवर्गं तथा कष्टं यदि स्वामी न पश्यति ।। ४७ ।।

भाषा – यदि मकरका चंद्रमा नीच शत्रुग्रहके साथमें बैठा हो और वह राशि अपने स्वामीकरके दृष्ट नहीं हो तो वह पुरुष अपने भाइयोंके ताईं कष्ट देनेवाला होवे है ।। ४७ ।।

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनंदनः ।।
वृश्चिके च यदा जीवो तदा जातो नृपो भवेत् ।। ४८ ।।

भाषा – मिथुनका राहु होवे और सिंहका मंगल और बृहस्पति वृश्चिक राशिका हो तो उत्पन्न भया बालक राजा होता है ।। ४८ ।।

कुंभे सौरिर्धने सूर्यो मेषे वैं चंद्रमा भवेत् ।।
मकरे च तथा भौमः स्वंभुंक्ते वा पितुर्धनम् ।। ४९ ।।

भाषा – जो कुंभराशिका सौरि नाम शनि हो, धनका सूर्य हो, मेषका चंद्रमा होवे, मकरका मंगल होवे तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया प्राणी अपना वा अपने पिताका धन भोगता है ।। ४९ ।।

दशमस्थौ बुधादित्यौ षष्ठे राहुधरासुतौ ।।
राजयोगे च यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ।। ५० ।।

भाषा – जो दशम स्थानमें बुध और आदित्य नाम सूर्य हो और छठे राहु और धरासुत नाम मंगल बैठा होवे तो ऐसे राजयोगमें उत्पन्न भया पुरुष बहुतों का मालिक होता है ।। ५० ।।

स्वगृहे दशमे सूर्यस्तुलायां सूर्यजो रिपौ ।।
बुधेंदू मिथुने धर्मे राजयोगोऽभिजायते ।। ५१ ।।

भाषा – अपने घरका सूर्य दशम स्थानमें बैठा हो, सूर्यका पुत्र शनि तुला

राशिका होकर छठे स्थानमें बैठा होवे और बुध और चंद्रमा मिथुनराशिके धर्मनाम नवम स्थानमें बैठे हों तो राजयोग कहा है ।। ५१ ।।

आदौ जीवः शितश्चांत्ये ग्रहा मध्ये निरंतरं ।।
राजयोगं विजानीयात् कुटुंबबलवर्धनः ।। ५२ ।।

भाषा – यदि लग्नमें बृहस्पति बैठा हो और शित नाम शुक्र अंत्य नाम बारहवें घरमें स्थित हो और अन्य ग्रह इनके बीचमें अर्थात् सातवें घरमें स्थित हों तो राजयोग जानना. इसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अपने कुटुंबके बलका बढानेवाला होता है ।। ५२ ।।

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा शितः
निरंतरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ।। ५३ ।।

भाषा – यदि जीव नाम बृहस्पति सहज नाम तीसरे घरमें बैठा हो और शित नाम शुक्र यदि अष्टम घरमें स्थित हो और अन्य ग्रह इनके बीचमें स्थित हों तो निश्चय राजा होवे है ।। ५३ ।।

वृषे जीवस्तथा चंद्रो मिथुने मकरे कुजः ।।
सिंहस्थो यदि शुक्रश्च कन्यायां बुधभास्करौ ।।५४।।
तुलायां जायते सौरी राजयोगो भवेद्यदा ।।
योगेस्मिन्पुण्यवान्न्यायी जायते मानवः शुभः ।। ५५ ।।

भाषा – जिस पुरुषकी जन्मकुण्डलीमें यदि वृषराशिका बृहस्पति हो और चंद्रमा मिथुनका हो और मकरका कुज नाम मंगल हो और सिंहका शुक्र हो और कन्याके बुध सूर्य हों और तुलाराशिके विषें सौरि नाम शनिके प्राप्त भये संते राजयोग होता है ऐसे योगमें उत्पन्न भया सुंदर कर्मोंका करनेवाला और पुण्यवान् होता है ।। ५४ ।। ५५ ।।

अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति बालकः ।।
तदा कुटुंबमध्यं तु पूर्वं जातान्समुद्धरेत् ।। ५६ ।।

भाषा – ऊपर कहे भये योगमें उत्पन्न भये बालकको आठवें बारहवें वर्षमें अल्पायुयोग होता है यदि उसके उपरांत जीवित रहे तो वह अपने कुटुंबके बीचमें पूर्वजोंको इस संसारसे उद्धार कर देता है ।। ५६ ।।

क्रूरश्च तुलकेंद्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि च ।।
दरिद्रयोगजातश्च स्वयंपक्षक्षयंकरः ।। ५७ ।।

भाषा – यदि क्रूर ग्रह तुलाराशिका होकर केंद्रमें वा धन स्थानमें स्थित होवे तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया बालक अपने पक्षका क्षय करनेवाला दरिद्री होवे है ।। ५७ ।।

दशमे भवने चंद्रो सप्तमे भवने शितः ।।
पापैः पातालसंस्थैश्च वंशच्छेद करो नरः ।। ५८ ।।

भाषा – यदि दशम घरमें चंद्रमा बैठा हो और सातवें घरमें शित नाम शुक्र स्थित हो और पाताल नाम चौथे घरमें स्थित किसी पापग्रहसे युक्त होवे तो ऐसे योगमें उत्पन्न भया बालक अपने वंशका नाश करनेवाला होता है ।। ५८ ।।

मीनस्थे च यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत् ।।
राहुश्च सहजे यस्य माता तस्य न जीवति ।। ५९ ।।

भाषा – जो मीनराशिका बृहस्पति हो और धनराशिका सौरि नाम शनि होवे और राहु सहज नाम तीसरे स्थानमें स्थित हो तो उत्पन्न भये बालककी माता नहीं जीवे ।। ५९ ।।

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे च यदा शितः ।।
नवमे च भवेत्सूर्यः स्वल्पायुश्च भवेन्नरः ।। ६० ।।

भाषा – यदि सातवें घरमें मंगल स्थित हो और अष्टम स्थानमें शित नाम शुक्र स्थित हो और नवम घरमें सूर्य बैठा हो तो वह पुरुष थोडी आयुवाला होता है ।। ६० ।।

तस्य भ्राता भवेदन्यान्प्रीतात्मा च समुद्धरेत् ।।
जीवके च भवेल्लग्ने सर्वयोगे शुभंकरः ।। ६१ ।।
दीर्घजीवी महाप्राज्ञो स पुमान्नायको भवेत् ।।
अस्मिन्योगे भवेज्जातो स विभुर्दंभर्वाजितः ।। ६२ ।।

भाषा – ऊपर कहे भये योगके अन्य यदि बृहस्पति लग्नमें बैठा होवे तो कहा भया योग शुभ होता है और इस योगमें उत्पन्न भया मनुष्य बडी आयुवाला बडा पंडित और पाखंड करके वर्जित जिसके अन्य वहुतसे भ्राता और आत्माका उद्धार

करनेवाला होता है और बहुतेरों का मालिक तथा सब प्रकारसे शुभ होता है ।। ६१ ।। ६२ ।।

दानभोगादिविख्यातः सामान्यः संभवेन्न हि ।।
कर्के सौरिर्वृषे राहुर्बहुभार्यायुतो नरः ।। ६३ ।।
वीक्षिते तु सुतस्थाने सौरिर्यत्रतदेकिकः ।। ६४ ।।

भाषा – यदि कर्कका शनि होवे और वृषका राहु होवे तो वह पुरुष बहुत से दान भोगादि करके संपन्न और अपने कुलमें विख्यात होता है और बहुत स्त्रियों का मालिक होवे है और वही अकेला शनि सुत नाम पंचम घरको देखता होवे तो अकेलाही एक स्त्रीका स्वामी होता है ।। ६३ ।। ६४ ।।

राहुजीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने स्थानाच्चतुर्थके ।।
उमापतिर्यदि रक्षेन्नाशं याति त्रयोदशे ।। ६५ ।।

भाषा – राहु और वृहस्पति अपने शत्रुके घरके होकर लग्नसे वा अपने स्थानसे चौथे स्थानमें विद्यमान हीं तो उसकी उमापति भी रक्षा करे तो भी तेरह वर्षका होकर नाशको प्राप्त होता है ।। ६५ ।।

लग्नात्स्यादष्टमे भौमस्त्रिकोणे नीचगो रविः ।।
शीघ्रं च गुरुधर्मस्थो लक्ष्मीपात्रं भवेन्नरः ।। ६६ ।।

भाषा – यदि लग्नसे अष्टम स्थानमें मंगल बैठा हो और त्रिकोण नाम नवम पंचम इन स्थानोंमें नीचका सूर्य स्थित हो और अतिचारी बृहस्पति धर्म नाम नवें घरमें बैठा हो तो वह मनुष्य लक्ष्मीका पात्र याने लक्ष्मीका भोगनेवाला होता है ।। ६६ ।।

मीने शुक्रो बुधः स्वांगे लग्नं सूर्यः शशी धने ।।
सहजे च भवेद्भौमो राजयोगं प्रयच्छति ।। ६७ ।।

भाषा – मीनराशिका शुक्र और बुध कन्याराशिका हो और सूर्य चन्द्रमा धनराशिके होकर लग्नमें स्थित होवें और मंगल तीसरे स्थानमें स्थित हो तो राजयोग होता है ।। ६७ ।।

अस्मिन्योगे भवेज्जातो देवतागुरुपूजकः ।।
स्वदेशे परदेशे च विख्यातो जनदुर्लभः ।। ६८ ।।

भाषा – कहे भये योगमें उत्पन्न भया मनुष्य देवता गुरुका पूजन करने

वाला और अपने देशमें वा परदेशमें विख्यात होता है और परजनोंसे भी बडाईको प्राप्त होता है ।। ६८ ।।

व्यये जीवो धने सौरी रविभौमौ बुधस्तथा ।।
विवाहसमये तस्य स जातो म्रियते पिता ।। ६९ ।।

भाषा – जो व्यय नाम बारहवें घरमें जीव नाम बृहस्पति बैठा हो और धन नाम द्वितीय स्थानमें शनि सूर्य मंगल बुध बैठे हों तो उत्पन्न भये बालकका पिता विवाहके समय मृत्युको प्राप्त होता है ।। ६९ ।।

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने शशी भवेत् ।।
स्वज्ञातिमध्ये विख्यातः कुटुंबकुलदीपकः ।। ७० ।।

भाषा – भ्रातृ नाम तृतीय स्थानमें यदि जीव नाम बृहस्पति हो और लाभ नाम एकादश स्थानमें शशी नाम चन्द्रमा स्थित होवे तो वह पुरुष अपने कुलमें दीपक और जातीमें श्रेष्ठ तथा कुटुंबमें विख्यात होता है ।। ७० ।।

लग्ने शुक्रो धने चंद्रः सहजस्थो यदा गुरुः ।।
तदार्जितं पितुर्द्रव्यं यच्छुक्रो नैव पश्यति ।। ७१ ।।

भाषा – जन्मलग्नमें शुक्र हो और धनस्थानमें चंद्रमा बैठा हो और सहज नाम तीसरे स्थानमें यदि गुरु नाम बृहस्पति स्थित होवे और इन स्थानोंमें से किसी स्थानको लग्नमें बैठा भया शुक्र नहीं देखता हो तो वह पुरुष पिताके धनको नहीं भोगता है ।। ७१ ।।

सिंहे भौमस्तथा सौरिः कन्यायां च यदा शितः
मिथुने च यदा राहुर्म्रियते जननी शिशोः ।। ७२ ।।

भाषा – यदि सिंहराशिका मंगल और सौरि नाम शनैश्चर हो और कन्या राशिका शुक्र हो और मिथुन का राहु होवे तो उत्पन्न भये बालककी माता मृत्युको प्राप्त होती है ।। ७२ ।।

अस्मिन्योगे तु यो जातो बालभावेपि निर्धनः
विधुभौमौ च एकस्थौ तदा सौख्यं प्रचक्षते ।। ७३ ।।

भाषा – कहे भये योगसे दूसरा फल कहते हैं कि उक्त योगमें उत्पन्न भया मनुष्य बालावस्थामें निर्धन होता है और यदि विधु नाम चन्द्रमा मंगल एक स्थानमें स्थित होवें तो पश्चात् सुखको प्राप्त होता है ।। ७३ ।।

स्वस्थाने लग्नगः क्रूरः पाताले सप्तमस्तथा ।।
दशमे भवने क्रूरः षष्ठं जीवति बालकः ।। ७४ ।।

भाषा – यदि क्रूर ग्रह अपने घरका होकर लग्नमें वा चतुर्थ सप्तम वा दशम इन स्थानोंके विषें होके और कोई शुभ ग्रह साथमें नहीं हो तो उत्पन्न भया बालक छः वर्षपर्यंत जीता है ।। ७४ ।।

अस्मिन्योगे सुतो जातो मातुर्दुःखकरो भवेत् ।
यदि जीवो न पश्यति मातृ पक्षक्षयंकरः ।। ७५ ।।

भाषा – जो यदि कहे भये योगमें पुत्र उत्पन्न होवे तो माताको दुःख उत्पन्न करनेवाला होता है और कन्या हो तो नहीं और यदि वृहस्पति छठे घरको न देखे तो माताके पक्षका क्षय नाम नाश करनेवाला होता है ।। ७५ ।।

स्वक्षेत्रे च यदा सूर्यः कन्यायां क्रूरगेहगः ।।
क्रूरक्षेत्रे यदा राहुः षष्ठवर्षेण जीवति ।। ७६ ।।

भाषा – अब और भी छः वर्ष जीनेका योग कहते हैं। यदि अपने घरका सूर्य हो और कोई क्रूर ग्रह कन्याराशिमें स्थित होवे और क्रूर ग्रहके घरका राहु होवे तो ऐसे योगमें भी बालक छठे वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ।। ७६ ।।

अष्टमस्थे निशानाथे केंद्रे च क्रूरसंस्थितः ।।
कर्मस्थाने यदा राहुर्वर्षमेकोनविंशतिः ।। ७७ ।।

भाषा – और भी मृत्युयोग कहते हैं। अष्टम स्थानमें चंद्रमा हो और केंद्र क्रूर ग्रहोंसे युक्त होवे और कर्म नाम दशवें घरमें राहु बैठा हो तो उन्नीसवें वर्षमें मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।। ७७ ।।

उच्चस्थानगतः सौम्यः केंद्रस्थाने भवति चेत्
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य कुटुंबाधारनिश्चयः ।। ७८ ।।

भाषा – सौम्य ग्रह उच्चके होकर यदि केंद्र याने प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें स्थित होवें तो निश्चयकरके राज्य प्राप्त करते हैं और कुटुंबको पालन करता हुआ कुलमें एकही भाग्यवाला होता है ऐसा निश्चय है ।। ७८ ।।

सप्तमे भवने भानुर्मध्यस्थो भूमिनंदनः ।।
राहुर्लग्ने यदा जातः पिता तस्य न जीवति ।। ७९ ।।

भाषा – यदि जन्मलग्नसे सूर्य सप्तम स्थानमें होवे और लग्न और सूर्यके बीचमें भूमिनंदन नाम मंगल बैठा होवे और राहु लग्नमें स्थित हो तो उत्पन्न भये बालक का पिता मृत्युको प्राप्त होता है।। ७९ ।।

स्मरे व्यये तृतीये चाष्टमे क्रूरग्रहो यदि ।।
तदा जातस्य पुत्रस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ।। ८० ।।

भाषा – यदि जन्मलग्नसे क्रूर ग्रह स्मर नाम सप्तम और व्यय नाम द्वादश और तृतीय वा अष्टम इन स्थानोंके विषें स्थित होवे तो उत्पन्न भये पुत्रके शरीर में कष्ट याने रोग सदैव रहता है।। ८० ।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधसौरियुतस्तदा ।।
दीर्घायुर्जायते तस्य संपदश्च पदे पदे ।। ८१ ।।

भाषा – अपने घरका बृहस्पति हो और बुध शनिकरके युक्त होवे तो ऐसे योगमें उत्पन्न होनेवाला बहुतसी आयुवाला होकर संपदाओं करके युक्त होता है और हमेशा सिद्धिको प्राप्त होवे है।। ८१ ।।

मीने शुक्रो यदा जीवश्चंद्रमा च यदा भवेत् ।।
जातस्य राजसौभाग्यं बहुपुत्रकुटुंबवान् ।। ८२ ।।

भाषा – यदि मीनराशिका शुक्र और बृहस्पति चंद्रमा होवे तो उत्पन्न भया बालक सब प्रकारसे सौभाग्यको प्राप्त होकर बहुत पुत्रयुक्त और बहुत कुटुंबवाला होता है।। ८२ ।।

धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यदा ग्रहः ।।
तदा मातुर्भवेन्मृत्युरथवा पितृनाशनः ।। ८३ ।।

भाषा – यदि धनराशिका राहु बुध शुक्र शनि सूर्य इन ग्रहोंकरके युक्त हो तो उत्पन्न भये बालककी माता मृत्युको प्राप्त होती है अथवा उसकी माताकी मृत्यु न हो तो पिता मृत्युको प्राप्त होवे है।। ८३ ।।

लग्ने पापा व्यये पापा निधने पापसंस्थिताः ।।
तदा मातुर्भवेन्मृत्युश्चतुर्थे दशमे पिता ।। ८४ ।।

भाषा – जिस पुरुषके जन्मलग्नमें पाप ग्रह हों और द्वादश स्थानमें भी पाप ग्रह हों और अष्टम स्थान पाप ग्रहसे युक्त हो तो भी माता मृत्युको प्राप्त होती है और चौथे दशवें वर्षमें पिताकी मृत्युका योग होता है यह माताकी मृत्युका दूसरा योग है ।। ८४ ।।

इति श्रीगर्गजातकं श्रीयुतपाठकमंगलसेनात्मजकाशी–
रामविरचितहिन्दीटीकासहित संपूर्णम् ।
विक्रमीसंवत् १९६६; शकः १८३१.
आषाढकृष्णपंचमी गुरुवासरः ।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई – ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे – ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्यावाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे – महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक – वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५, फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डिंग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१. दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS